एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

सब्जी वर्गीये बैंगन की खेती

(*सत्य नारायण गुर्जर)
तकनीकी सहायक, कृषि विज्ञान केन्द्र, हिंडौन सिटी, करौली
*संवादी लेखक का ईमेल पता: gurjarsatyanarayan84@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहाँ की लगभग 75 प्रतिशत आबादी खेती पर ही निर्भर है। हमारे देश में बेंगन को गरीबों की सब्जी कहा जाता है सब्जीयों का भोजन मे महत्वपूर्ण योगदान होता है। बैंगन का जन्म स्थान भारत एवं चीन के उष्ण कटिबन्धी प्रदेश ही माने जाते हैं। बैंगन की खेती लगभग पूरे भारत वर्ष भर में की जाती हैं। बेंगन में विटामिन ए, सी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट खनिज पदार्थो मे लोह तत्व की पर्याप्त मात्रा होती है ।

जलवायु तथा भूमि – बैंगन की अच्छी पैदावार गर्म जलवायु लबगग 25 डिग्री सेल्सियस तापक्रम मे अच्छी बढ़वार होती हैं। तथा जल जल निकास युक्त दौमट मिट्टी इसके उत्पादन हेतु सर्वोत्ताम मानी गयी हैं। तथा भूमि का पी एच मान 5-5 –6-5 होना चाहिए ।

बैंगन की खेती का सही समय– मुख्यत जून–जुलाई में बैंगन की फसल ली जाती है।

बैंगन की उन्नत किस्में

1- पूसा पर्पल राउंड,
2- पूसा हाईब्रिड–6
3- पूसा अनमोल
4- पूसा पर्पल लोंग
5- पूसा क्रान्ति
6- पूसा बिन्दु
7- अर्का निधी

बीज की मात्रा – एक हेक्टेयर में करीब 400 से 500 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है ।

ऐसे लगाएं बैंगन– बैंगन का अगर ज्यादा उत्पादन चाहिए, तो दो पौधों के बीच की दूरी का खास ध्यान रखा होता है। दो पौधों और दो कतार के बीच की दूरी 60 सेंटीमीटर होनी ही चाहिए।

खाद और उर्वरक– खाद व उर्वरक की मात्रा मिट्टी की जांच के हिसाब से ही करनी चाहिए। जहां मिट्टी की जांच न की हो खेत तैयार करते समय 25–30 टन गोबर की सड़ी खाद मिट्टी में अच्छी तरह मिला देनी चाहिए। इसके साथ–साथ 200 किलो ग्राम यूरिया, 370 किलो ग्राम सुपर फॉस्फेट और 100 किलो ग्राम पोटेशियम सल्फेट का इस्तेमाल करना चाहिए। यूरिया की एक तिहाई मात्रा और सुपरफॉस्फेट तथा पौटेशियम सल्फेट की पूरी मात्रा खेत में आखिरी बार तैयारी करते समय इस्तेमाल की जानी चाहिए। बची यूरिया की मात्रा को दो बराबर खुराकों में देना चाहिए। पहली खुराक पौधे की रोपाई के तीन सप्ताह बाद दी जाती है जबकि दूसरी मात्रा पहली मात्रा देने के चार सप्ताह बाद दी

जानी चाहिए। रोपाई के दो सप्ताह बाद मोनोक्रोटोफास 0-04 प्रतिशत घोल, 15 मि०ली० प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें।

पौध संरक्षण– बैंगन की फसल कई प्रकार के हानिकारक रोगों द्वारा प्रभावित होती हैं। अगर इसका समय रहते नियंत्रण ना किया गया तो बाजार मूल्य में गिरावट एवं अत्यधिक हानि का सामना करना पड़ सकता हैं। अतः बैगन के प्रमुख रोगो की पहचान कर उनका समय पर उपचार करें।

छोटी पत्ती रोग – यह बैंगन का एक माइकोप्लाजमा, जनित विनाषकारी रोग है जिसे 'लीफ होपर' नामक कीट से हिलता हैं। इसमें रोगी पौधा बोना रह जाता हैं। तथा पत्तियां आकार में छोटी रह जाती हैं। प्रायः रोगी पौधों पर फूल नहीं बनते हैं। और पौधा झाड़ीनुमा हो जाता हैं। यदि इन पौधों पर फल भी लग जाते हैं तो वे अत्यंत कठोर होते हैं। रोगी पौधों को उखाड कर जला देना चाहिए।

रोकथाम :– लीफहोपर से फसल को बचाने के लिए 0-1 प्रतिशत एकाटोक्स या फोलीडोल का फल निर्माण तक छिड़काव करना चाहिए। पौधों को रोपाई से पूर्व टेट्रासाइक्लिन के 100 पी.पी.एम. घोल में डुबोकर रोपाई करनी चाहिए। रोग रोधी किस्में जैसे – पूसा पर्पिल क्लस्टर और कटराइन सैल 252–1–1 और सैल 252–2–1 उगाये। पेड़ी फसल ना लेवे।

आर्द गलन (डेम्पिंग ऑफ)– यह रोग पीथियम अफेनिडर्मेटम नामक कवक द्वारा उत्पन्न होता है। यह रोग मुख्यतः पौधषाला में उगे पौधों पर लगता हैं। यह पौधों की दो अवस्थाओं में पाया जाता हैं । पहली अवस्था में पौधों के भूमि से निकलने से पूर्व अथवा तुरन्त पश्चात तथा दूसरी अवस्था में पौध बन जाने पर। पहली अवस्था में पौधे छोटी अवस्था में ही मर जाते हैं। दूसरी अवस्था में भूमि के सम्पर्क वाले तने के हिस्से में पीले–हरे रंग के विक्षत बनते हैं। जो तने को प्रभावित कर उत्ताकों को नष्ट कर देते हैं। पौधषाला में पौधों का मुरझान और बाद में सूख जाना रोग का प्रमुख लक्षण हैं।

रोकथाम :– बीज को बुवाई से पूर्व थाइराम या कैप्टान नामक कवकनाषी की 2-5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर बोयें। जहाँ तक हो सके बीजों की बुवाई उचित जल निकास युक्त भूमि से 10–15 से.मी. ऊंचाई पर बुवाई करें। बीजों को बुवाई से पूर्व 50 डिग्री से पूर्व 50 डिग्री सेल्सियस तापमान के गर्म पानी से 30 मिनट तक उपचारित कर बोयें। पौधषाला में रोगग्रस्त पोधों को निकाल कर नष्ट कर देना चाहिए। खड़ी फसल में बोडोमिश्रण 0-8 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।

फोमोप्सिस झुलसा रोग– यह रोग फोमोप्सिस वेकसेन्स नामक कवक द्वारा उत्पन्न होता हैं। यह बैंगन का एक भयंकर हानिकारक रोग हैं रोगी पौधों की पत्तियों पर छोटे छोट गोन भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं एवं अनियमित आकार के काले धब्बे पत्तियों के किनारों पर दिखाई पडते हैं। रोगी पत्तियां पीली पर पड़कर सूख जाती हैं।रोगी फलों पर धूल के काणों के समान भूरे रंग के धब्बे दिखाई पड़ते हैं जो आकार में बढ़कर फलों को सडाकर जमीन पर गिरा देते हैं यह एक मृदाजनित रोग हैं। इसलिए इस रोग का प्रकोप पौधषाला में भी होता हैं। जिसके कारण पौधे झुलस जाते हैं।

रोकथाम :– पौधों को 0-2 प्रतिशत कैप्टान का 7–8 दिन में छिड़काव कर रोग मुक्त करें। रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर जला देवें। रोगप्रतिरोधी किस्में जैसे 'पूसा भैरव' और 'फ्लोरिडा मार्केट' का चयन करें। रोग का अधिक संक्रमण होने पर 2 ग्राम दवा लीटर जल में मिलाकर छिड़काव करें।

कीट– तना एवं फल छेदक, हरा तेला ,एपीलेकना बीटल, लाल माईट ये मुख्ये कीट है जो बेंगन मे लगते है ।

रोकथाम :– मेलाथियान 0-02% या फोलिडोल 0-03% का छिड़काव करके लगने वाले कीटों से बचाकर उत्पादन बढ़ा सकते है।

बेंगन की तुड़ाई – बैंगन के फल जब मुलायम हों और उनमें ज्यादा बीज न बनें हों तभी उन्हें तोड़ लेने चाहिए। ज्यादा बड़े होने पर इनमें बीज पड़ जाते हैं और तब ये उतने स्वादिष्ट नहीं रह जाते ।

उपज – इसकी उपज 200–250 कुंटल प्रति हेक्टेयर होती है तथा संकर किस्मों से करीब 350–400 कुंटल प्रति हेक्टेयर तक का उत्पादन मिल जाता है।